कोई भी मंदिर के माध्यम से कोई बर्तन नहीं ले जा सकता था

आज के बाइबिल अध्ययन में आपका स्वागत है।

आज हम एक ऐसे व्यवहार के बारे में जानेंगे जो परमेश्वर के मंदिर में हो रहा था — जिसे प्रभु ने नापसंद किया और जिसे उन्होंने सख्ती से फटकारा।

आइए पढ़ते हैं:

मरकुस 11:15–16
“वे यरूशलेम पहुँचे। वह मंदिर में गया और उन लोगों को बाहर निकालने लगा जो मंदिर में बेच रहे थे और खरीद रहे थे। उसने बदलने वालों की मेजें और कबूतर बेचने वालों के स्थान उलट
दिए।
और उसने किसी को भी मंदिर के माध्यम से कुछ भी ले जाने की अनुमति नहीं दी।”

यह पद प्रसिद्ध है कि यीशु ने मंदिर में खरीदने और बेचने वालों को बाहर निकाला। लेकिन अक्सर छूट जाता है कि आयत 16 में, यीशु ने किसी को भी मंदिर के प्रांगण से कोई वस्तु या बर्तन ले जाने से

कोई भी मंदिर के माध्यम से कोई बर्तन नहीं ले जा सकता था

मना किया।

इसका क्या मतलब है?

यहाँ ‘बर्तन’ मंदिर के पवित्र सामान नहीं थे। लोग मंदिर की चीज़ें चुरा या हिला नहीं रहे थे। वे मंदिर के परिसर को शॉर्टकट के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे, टोकरी, कंटेनर, औजार ले जा रहे थे — रोजमर्रा की चीज़ें।

इतिहास में, यरूशलेम का मंदिर दो महत्वपूर्ण इलाकों के बीच बना था:

एक तरफ बेथेस्दा था, जो बड़ा भेड़ बाजार था।

दूसरी तरफ ऊपरी शहर था, जहाँ कई लोग रहते और काम करते थे।

समय बचाने के लिए, लोग मंदिर के आंगन को रास्ते के रूप में इस्तेमाल करने लगे, ऊपरी शहर से बेथेस्दा के बाजार तक जाने के लिए। वे पवित्र स्थान को एक सार्वजनिक सड़क की तरह समझते थे। वे सामान, खाना, फर्नीचर, और यहां तक कि जुआ खेलने की मेजें भी मंदिर के माध्यम से ले जा रहे थे — पूरी तरह से इसकी पवित्रता की उपेक्षा करते हुए।

कोई भी मंदिर के माध्यम से कोई बर्तन नहीं ले जा सकता था

समय के साथ, मंदिर पर इस तरह के यातायात की वजह से अशुद्धि आ गई:

व्यापारी जो बाजार तक जल्दी पहुंचना चाहते थे।

चोर जो भीड़ में घुल मिल जाते थे।

गपशप करने वाले और आलसी जो मंदिर को मिलन स्थल बना लेते थे।

वे लोग जो बुरे इरादों से मंदिर के रास्ते से गुजरते थे।

इस प्रकार की अवमाननापूर्ण गतिविधि प्रभु को बहुत कष्ट देती थी। यीशु ने सिर्फ व्यापारियों को फटकारा नहीं, बल्कि मंदिर के स्थान के गलत उपयोग को भी रोका। उन्होंने प्रवेश द्वारों की रक्षा की और किसी को भी मंदिर के माध्यम से बर्तन ले जाने नहीं दिया।

आज भी हम देखते हैं कि चर्चों के साथ इस तरह का व्यवहार होता है:

लोग बिना उद्देश्य के आते-जाते रहते हैं, बिना पूजा के इरादे के।

कोई भी मंदिर के माध्यम से कोई बर्तन नहीं ले जा सकता था

कुछ विक्रेता देवालय के पास स्नैक्स, जूते या अन्य वस्तुएं बेचते हैं।

बच्चे पूजा स्थल को खेल का मैदान बना देते हैं।

कुछ लोग चर्च में भगवान से मिलने नहीं आते, बल्कि व्यापार करने, सामाजिक संपर्क बनाने या अपने स्वार्थ के लिए आते हैं।

परमेश्वर के घर को पवित्र स्थान के रूप में माना जाना चाहिए।

मलाकी 1:6
“बेटा अपने पिता का सम्मान करता है, और दास अपने स्वामी का।
अगर मैं पिता हूँ, तो मेरा सम्मान कहाँ है? और अगर मैं
स्वामी हूँ, तो मेरा भय कहाँ है? ऐसा है यहोवा सेनाओं का यह
वचन तुम्हारे लिए।”

जैसे हम अपने घर की रक्षा और सम्मान करते हैं — और सुनिश्चित करते हैं कि मेहमान आदर से पेश आएं — वैसे ही परमेश्वर के घर के साथ और भी अधिक सम्मान और reverence होना चाहिए।

कोई भी मंदिर के माध्यम से कोई बर्तन नहीं ले जा सकता था

मगर परमेश्वर का मंदिर केवल एक इमारत नहीं है। शास्त्र हमें यह भी बताता है कि हमारे शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर हैं:

1 कुरिन्थियों 6:19–20
“क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का
मंदिर है, जो तुम में है, जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है?
तुम अपने नहीं हो,
क्योंकि तुम महँगे दाम से खरीदे गए हो। इसलिए अपने शरीर से परमेश्वर की महिमा करो।”

इसका मतलब है कि हमारे शरीर किसी भी अस्वच्छ चीज़ के लिए उपयोग नहीं होने चाहिए। वे पाप, अपवित्रता या लापरवाही के बर्तन नहीं हैं। जैसे यीशु ने भौतिक मंदिर को शुद्ध किया, वैसे ही वह हमारे अंदरूनी मंदिर — हमारे हृदय, मन और शरीर — को सभी अपवित्र चीज़ों से शुद्ध करना चाहता है।

1 कुरिन्थियों 6:15–18

कोई भी मंदिर के माध्यम से कोई बर्तन नहीं ले जा सकता था

“क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर मसीह के अंग हैं? क्या मैं मसीह के अंग लेकर किसी वेश्या के अंग बना दूँ? ऐसा
न हो!
क्या तुम नहीं जानते कि जो वेश्या के साथ जुड़ा है, वह उसके
साथ एक शरीर होता है? क्योंकि लिखा है, ‘दो एक शरीर होंगे।’
जो प्रभु से जुड़ा है, वह आत्मा में एक होता है।
व्यभिचार से बचो। हर दूसरा पाप जो कोई करता है, शरीर के बाहर होता है, लेकिन व्यभिचारी अपने शरीर के विरुद्ध पाप करता
है।”

जैसे यीशु ने मंदिर को सिर्फ एक राह या अपवित्र स्थान बनने से रोका, वैसे ही हमें अपने शरीर, जो पवित्र आत्मा का मंदिर है, को पाप के रास्ते नहीं बनने देना चाहिए। हमें परमेश्वर का सम्मान करना चाहिए — उसके घर में और अपने आप में।

आइए हम शारीरिक पूजा स्थलों की पवित्रता को बनाए रखें — और उससे भी अधिक अपने जीवन की पवित्रता।

परमेश्वर के घर का सम्मान करें। अपने शरीर का सम्मान करें, जो आत्मा का मंदिर है।

कोई भी मंदिर के माध्यम से कोई बर्तन नहीं ले जा सकता था

प्रभु आपको आशीर्वाद दे और आपकी रक्षा करे।
आमीन।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp